मुख्य उद्देश्य व संक्षिप्त विवरण

स्वपर कल्याणार्थ एवं अपने जीवन की स्वल्प अल्प प्राप्त शिक्षाओं द्वारा खास तौर पर गरीब एवं दुखित जनता को लाभ पहुँचाना और श्रीमत्परम पूज्य विश्ववन्दनीय आचार्य सम्राट् श्री१०८ शान्तिसागरजी के परम शिष्य जीवन हितैषी श्री १०५ क्षु० चन्द्रकीर्तिजी की गुण स्मृति आचन्द्रार्क स्थायी रहे इसी कारण तुच्छ सेवाओं द्वारा जीवन को पवित्र बनाना ही मुख्य उद्देश्य है।

(१) "चन्द्रकीर्ति वक्स" समस्त रोगों की १०८ दवाएँ २० सेर वजन का प्रत्येक गृहस्थ घरू उपयोग के लिये वर्ष में १, व बांटने के लिये (शाखा वाले) चाहे जितने वार मुफ्त ही मंगा सकते हैं।

(२) इसका कोई ध्रौव्य फण्ड नहीं है मात्र श्री चन्द्रकीर्ति जैन यात्रा संघ ११ मोटरों द्वारा देहली से श्रीबाहुबलिजी महामस्तकाभिषेक के समय गया था उसी के स्मरण स्वरूप(धरियावद स्थापित संस्था) देहली में स्थापित की है इसका कुल व्यय निजी सम्पत्ति एवं मैम्बरी फीस पर निर्भर है।

(३) मैम्बरी फीस वार्षिक २) रु० है शाखा खोलने वाले व घरू खर्च को पूरा वक्स मंगाने वालों को मैम्बर होना चाहिए।

(४) पूरा वक्स मंगाने में प्रथम वार मैम्वरी फीस २) शीशी बोतल डिब्बे ४।=),रजिस्टर परचे रोगी नक्शे १),वक्स ।।) बिल्टी वी.पी. तांगा ।।।) धर्मादा ।) इस तरह कुल८।।।=) पड़ना है। मैम्बरी फी २) रु० प्राप्त होने पर शेष वी.पी. विल्टी करदी जाती है।

(५) चन्द्रकीर्ति वक्स व KN महिला वक्स दोनों एक साथ मंगाने पर १५) रु० पैकिंगादि व्यय होगा। विशेष विवरण के लिये लिखिये। आरोग्याभिलाषी—

व्यवस्थापक—आ. इ. चन्द्रकीर्ति जैन औषधालय,

(नया मंदिर) पहाड़ी धीरज, देहली।

आल इण्डिया चन्द्रकीर्ति जैन औषधालय देहली की

१०८ दवाइयों का सेवन विधान—

"चन्द्रकीर्ति चिकित्सा सार"

नाम रोग संक्षिप्त लक्षणों सहित	नाम औषधि मात्रा समय अनुपान और गुण
अजीर्ण रोग बद-हज़मी अन्न न पचना, पेट भारी रहने को कहते हैं।	**१. चन्द्रकीर्ति चूर्ण** भोजन के पश्चात् ४ या ८ रत्ती जल के साथ देने से मन्दाग्नि अजीर्ण नष्ट हो कर भूख बढ़ती है। **२. गंधकराज वटी** भोजन के बाद १-१ गोली, (चूर्ण रूप में २ रत्ती की मात्रा) जल के साथ देने से उपरोक्त लाभ होता है।
अरुचि रोग भोजन की इच्छा न होने को कहते हैं।	**३. अग्निवर्धक चूर्ण** भोजन के बाद ३-३ रत्ती लेने से अरुचि मिटे, भूख बढ़े पेट के समस्त विकार दूर हों। **४. अग्निकुमार रस**
अग्निमांद्य रोग मन्दाग्नि भूखकी इच्छा न होना पाचन न होना	१ रत्ती दवा प्रातः सायं अजवायन नमक या पान के रस या अदरख के रस या मुनका में देनेसे मन्दाग्नि, मल दोष

दूर होता है। पेट के समस्त रोगों में लाभ होता है।

५. सैंधवादि चूर्ण

१ माशे सुबह शाम ठंडे जल के साथ देने से खट्टी२ डकारें व मन्दाग्नि नष्ट हो कर भूख बढ़ती है ज़ायका ठीक होता है।

अतीसार रोग
दस्तोंकी बीमारी को कहते हैं।

६. विल्वादि चूर्ण

सुबह शाम और रात को २-२ रत्ती जल के साथ देने से बदहजमी जल दोष या पतले दस्त व हर प्रकार के दस्त होना ठीक होते हैं।

अतीसार ज्वर
दस्तों के साथ ज्वर या सन्निपात हो।

७. आनन्द भैरव रस

१-२ गोली या (चूर्ण रूप में १ रत्ती) समयानुसार सोंठ अदरख का रस या मिश्री की चासनी में देने से ज्वर दस्त त्रिदोष सन्निपात आदि रोगों में लाभ होता है व सर्दी के समय पान में खा लेने से हर तरहका बचाव होता है।

संग्रहणी रोग
पतले दस्त व ज्यादा आकर

८. ग्रहणी कपाट रस

१ रत्ती गौ के मठे (छाछ) या ठंडे पानी के साथ देने से खून के दस्त,

क्षीणता होती जाती है।

ज्वरातिसार व हर तरह के दस्तों में लाभ होता है।

आमातिसार

मरोड़ ऐंठन के साथ चिकना मल जाने को आमातिसार व रक्त जाने को रक्तातिसार कहते हैं।

६. अतीसारघ्न चूर्ण

५ रत्ती दवा पानी या दही के तोड़ में दिन रात में ३-४ बार लेने से पतले व आंव (मरोड़ा) के दस्त ठीक होते हैं।

१०. राम बाण रस

दोदो रत्ती दिन में ३ बार सौंफ अर्क पानी ऽ- के साथ देने से आंव (पेचिस) मरोड़ कच्चे दस्त, ऐंठन अन्न न पचना आदि रोग दूर होते हैं।

अपस्मार रोग

मृगी मूर्छा बेहोशी हो कर हाथ पैरों का ऐंठना मुँह से लार आ जाना आदि लक्षण हैं स्त्रियों को यही रोग योपापस्मार हिस्टिरिया कहते हैं।

११. मृगीहर केशरी

१ गोली (चूर्ण रूप में २ रत्ती) सुबह शाम दूध के साथ निगलने से एक मास में मृगी रोग जड़ से नष्ट होता है।

१२. मृगीहर नस्य

४ रत्ती दौरे के वक्त नाक में सुंघा कर फूंकने से दौरा शांत हो कर बेहोशी नष्ट हो जाती है।

अभिघात रोग

चोट लग

१३. चक्र शल्यादि तैल

समयानुसार लगानेसे हर तरहके चोट दर्द खून

बहना बन्द होता है।

हथियार से खून निकल आना।

१४. स्वदेशी टिंचर

थोड़ा २ लगाने से चोट दर्द विष, सूजन, गांठ वगैरह ठीक होते हैं।

अम्ल पित्त

भोजन के कुछ समय बाद जी मचलाना खट्टी डकारें वमन (कै) हो जाना आदि लक्षण हैं।

१५. रजत पर्पटी

सुबह शाम १-२ रत्ती दवा ३ रत्ती अजवायन के सत में देने से अम्लपित्त खट्टी डकारें भोजन के बाद कै, वमन, जी मचलाना आदि, बन्द होता है।

१६. सुधा विन्दु

६ मासे से १ तोला तक भोजन के पश्चात् दूध मिश्री में मिला कर पिलाने से उपर्युक्त लाभ होता है।

अर्श रोग

गुदा में मस्से होना मल के साथ रक्त खून का गिरना वादी ववासीर में खून नहीं आता, मस्सों की ज्यादा तकलीफ होती है।

१७. अर्शान्तक चूर्ण

३ माशे से ६ माशे तक सुबह शाम कच्चे दूध या पानी के साथ देने से खूनी या बादी बवासीर ठीक होती है।

१८. अर्शान्तक

१ तोला दवा ऽ। साफ ठंडे पानी में मिला कर प्रति दिन सवेरे और इसी तरह शाम को लेकर मस्सों के ऊपर (गुदा में)

५-१० मिनट तक रगड़ना चाहिये यानी इसी पानी से धोना चाहिये।

अश्मरी रोग
पथरी जम जाना पेशाब न होना।

१६. अश्मरी कुठार-रस

३ रत्ती सुबह शाम खाकर ऊपर से दूध ऽ। पानी ऽ। मिश्री १ तोला डालकर पिलाने से पथरी १५ दिन में कट कर गिर जाती है।

अनेक रोग
ज्वर सन्निपातादि अजीर्ण आदि रोगों में संजीवनी प्रसिद्ध औषधि है।

२०. संजीवन रस

यह दवा ज्वर, खांसी, त्रिदोष, सन्निपात, हैजा विष दोष, अजीर्ण, मन्दाग्नि आदि रोगों में मिश्री या गुड़ की चासनी अदरख का रस, पान का रस, जीरा, आदि उचित अनुपानों से १-२ तथा ४ गोली या (चूर्ण रूप में १-२ रत्ती) तक दे सकते हैं। बहुत ही उत्तम आयुर्वैदिक प्रसिद्ध महौषधि है। मलेरिया में तुलसी पत्र के साथ देने से अमृत तुल्य है।

आनाह रोग
कब्ज रहना दस्त न होना पेट फूल जाना।

२१. सन्मति चूर्ण

३ माशे से ४ माशे तक रात्रि को सोते समय ठंडे पानी के साथ देने से सवेरे दस्त साफ होता है पेट के समस्त विकार दूर हो जाते हैं।

अण्ड वृद्धि रोग
अण्डकोश लटक जाना दर्द होना सूज जाना।

२२. अंडवृद्धिहर लेप

प्रातः सायं गौमूत्र में घोंट कर लगावें ऊपर से तम्बाखू पत्र बांधने से अंडवृद्धि व सूजन दर्द आदि ठीक होता है।

उदर शूल
पेट में अचानक दर्द होना। सुई चुभने जैसी पीड़ा होना आदि।

२३. शूलान्तक

३ रत्ती दर्द के समय १ कोरे पान में रखकर इसी प्रकार १-१ घंटे में खिलाना और ऊपर से गर्म जल पिलाने से भयंकर पेट का शूल ठीक हो जाता है।

उदर रोग
पेट की बीमारी दर्द सूजन पेट का बढ़ जाना वा आदि।

२४. कुचलादि वटी

१ गोली (१-२ रत्ती चूर्ण) सुबह शाम और रात को गर्म पानी के साथ देने से हर तरह का भयंकर दर्द ठीक होता है।

उपदंश रोग
आतशक गर्मी इन्द्री में चट्टे पड़ जाना।

२५. उपदंशहर

३ रत्ती दवा मिश्री की चासनी में दिन में ३ बार देने से उपदंश और खांसी रोग में लाभ होता है।

उष्ण वात रोग
सोजाक इन्द्री से मवाद आना जलन कड़क पेशाब लाल

२६. अमृत चूर्ण

१ माशा दवा में बराबर की मिश्री मिलाकर सुबह शाम और रात को एक२ पाव दूध मिला कर इसी के साथ देने से

होना आदि लक्षण हैं।

पेशाब की कड़क जलन मवाद का आना ठीक होता है।

पेशाब भी रुक२ कर तथा जलन से आता है।

२७. सोजाक विन्दु

मात्रा १५-२० बूँद सुबह शाम १० तोला पानी में डाल कर पिचकारी से इन्द्री को धोवे इन्द्री से मवाद बहना जलन इन्द्री की सूजन ये ठीक होते हैं।

कर्ण रोग

कान की सब बीमारी, दर्द मवाद आना आदि।

२८. कर्णामृत

गर्म करके कान में डालने से कान का दर्द मवाद बहना आदि कान की बीमारी ठीक होती हैं। कभी कभी पिचकारी से कान धो देना चाहिये।

कास रोग

खांसी को कहते हैं यह खुश्क सूखी कफ सहित तरल वात पित्त और कफ से उत्पन्न अनेकों प्रकार की होती है।

२९. कासामृत रस

१-१ रत्ती सुबह शाम और रात को मिश्री की चासनी शरबत या पान अदरख के रस में देने से हर तरह की खांसी मिटती है।

३०. अरुणोदय

१ या १॥ रत्ती दिन में ३ बार मिश्री की चासनी में मिला कर खावें हर तरह की खांसी (ज्वर में भी) लाभ होता है।

कफ सहित

खांसी में छाती में भारीपन दाह गले में जलन आवाज बैठ जाना लक्षण होते हैं।

३१. कफ कुञ्जर रस

१-२रत्ती सुबह शाम रात को अदरख के रस और मिश्री के शर्बत या बनफसा शर्बत में देने से पुरानी से पुरानी खांसी जल्दी नष्ट हो जाती है।

३२. शंख भस्म

२-३ रत्ती दवा मिश्री की चासनी में देनेसे कफ खांसी नष्ट हो १-२ रत्ती दवा अदरख के रस और पान के रस मिश्री की चासनी में देने से पुरानी कफ खांसी १ माह में नष्ट हो जाती है।

३३. कफघ्नि रस

१-२ रती अदरख के रस और मिश्री में देने से पुरानी कफ या सूखी व कुक्कुर खाँसी शीघ्र ही नष्ट हो जाती है।

कुक्कुर खांसी

यह मयादी खांसी देर में जाती है इससे बच्चों को वमन हो जाता है।

३४. कास दमन रस

मात्रा १ रतीसे ३ रती तक ४-५ बार पान के रस अदरख के रसया वंशलोचन मिश्री का या गुड़ का शर्बत मिला देने से बच्चों से बड़ी उम्र वालों तक की कुक्कुर खांसी में लाभ होता है।

कृमि रोग

पेट में चुन्ने(कीड़े) पड़ जाना।

३५ कृमिहारी

१ माशे सुबह शाम वायविडंग के काढ़े के साथ देनेसे पेटके कृमि ठीक होते हैं।

६ माशा वायविडंग को एक पाव पानी में औंटाना जब एक छटांक रह जावे छान लेना यही वायविडंग का काढ़ा है।

गुल्म रोग

पेट में गोला उठना और बड़े ही वेग से दर्द हो कर छाती के पास तक दर्द होना मल की गांठें पड़ जाना आदि लक्षण हैं।

३६ गुल्म नाशक चूर्ण

१-१ माशा ३-४ बार अजवायन काला नमक ३ माशे मठे में डालकर पिलाने से गुल्म (वायु गोला) ठीक होता है।

३७ गुल्म कंटक लेप

दर्द के समय अजवायन हींग के साथ गौ मूत्र में घोट कर पेट पर लगाते से गुल्म पेट की गांठें वायुगोला अफारा आदि नष्ट होते हैं।

चर्म रोग

शरीर के ऊपर की बीमारियों को कहते हैं खाज दाद प्रसिद्ध ही हैं।

शरीर में फोड़े

३८ सूर्य पाक तैल

लगाने से खाज खुजली फोड़ा फुन्सी ज़ख्म गुप्त इन्द्री की सूजन आदि में लाभ करता है।

३९ चर्म बंधु

कैसा भी भयंकर जख्म मवाद का

भरा फोड़ा फुन्सी जख्म हों व समस्त चर्म रोगों पर लगाने से लाभ होता है।

फुंसी होना आदि अनेक प्रकार चर्म रोग होते हैं

४० शतांग लेप

हींग मिला कर गर्म पानी में लगाने से उठने वाला फोड़ा व कहीं का भी दर्द सूजन गांठ ठीक होता है।

४१ दाद का तमंचा

दाद में-चकत्ते से पड़ जाते हैं।

नीबू के रस में बारीक घोट कर लगाने से दाद ठीक होता है।

४२ पामा नाशन

खाज में-खुजली और मवाद सा आता है।

मठामें या घी या तेल में बारीक पीस कर लगाने से हर तरह की खाज खुजली ठीक होती हैं।

४३ स्वित्रादि लेप

श्वेत कुष्ट इस में शरीर गलता है सफेद दाग हो जाते हैं

गौमूत्र में खूब घोट कर बार २ लगा कर धूप में बैठने से सफेद दाग (कोढ़) १ माह में ठीक हो जाता है।

४४ छाजन का लेप

छाजन रोग चकत्ते पड़ कर खुजलाना मवाद बहना आदि।

अरन्डी के तेल में घोट कर लगाने से कठिन से कठिन छाजन ठीक हो जाती है।

अग्नि दग्ध
अग्नि से जल जाना।

४५ दग्ध व्रणारि

दही में पीस कर लगाने से जले हुए जख्म आदि जलन ठीक हो जाती है।

हर तरह के जख्म

४६ स्वदेशी आइडोफार्म

सूखा ही लगाने से सड़े हुए हर तरह के पुराने व नये जख्म ठीक हो जाते हैं।

रक्त विकार
खून की खराबी से शरीरमें अनेक प्रकार के रोग हो जाते हैं।

४७ मंजिष्टादि अर्क

६ माशे दवा और ६ माशे मिश्री मिला कर सुबह शाम पिलाने से हर तरह का खून विकार साफ हो कुष्ठ नाश होता है खून शुद्ध हो जाता है।

छर्दि रोग
खाया हुआ अन्न न पचना मुँह मार्ग से गिर जाना

४८ सुमति चूर्ण

१ माशे दवा जरूरत के समय २-३ वार मिश्री के शर्वत में देने से वार वार वमन (उल्टी) होना बन्द होता है।

ज्वर रोग
ताप बुखार फीवर आदि अनेकों नाम हैं। इकतरा एकदिन के अन्तर से

४६ ज्वरजया रस

१ या २ गोली या चूर्ण रूप में १ रत्ती ज्वर के पहिले २-२ घंटे में ३ वार पानी के साथ देने से शीत ज्वर तिजारी पसली बुखार रुक जाते हैं।

आता है तिजारी तीन दिन में आती है।

५० वीर कुनेन

१ या २ गोली (चूर्ण रूपमें २ रत्ती) उपरोक्त विधि से देने पर उपर्युक्त लाभ होता है।

चौथिया बुखार चार दिन में आता है।

५१ ज्वर भंजन भस्म

४रत्ती दवा ज्वरके पहिले २-२ घंटे में ३ वार मिश्री के शर्वत में देने से हर तरह के ज्वर रुक जाते हैं।

शीत ज्वर
जाड़े के साथ आता है इसके कई भेद हैं।

५२ ज्वर वाण अर्क

६ माशे अर्क १ तोला पानी में ज्वर के पहिले ३ वार पिलाने से शीत ज्वर चौथिया इकतरा ठीक होता है।

पैत्तिक ज्वर
में गर्मी घबराहट हो जाती है।

५३विश्व मित्र अर्क

सुबह शाम ६माशे अर्क में २॥ तोला पानी और मिश्री या दूध में डाल कर पिलाने से पैत्तिक ज्वर तथा गरमी ठीक हो जाती है।

अस्थि ज्वर
हमेशा शरीर में भरा हुआ रहता है हाथ पैरों के तलवों में जलन

५४ लघुवसन्त मालती

१ रत्ती सुबह शाम १॥ माशा वंशलोचन तज. इलायची के साथ मिश्री के शरबत में देने से जीर्ण ज्वर तपेदिक

होती है भूख कम
लगती है इससे
क्रमशः तपेदिक
ही हो जाता है।

जीर्ण ज्वर

२१ दिन के वाद
जीर्ण ज्वर कह-
लाता है शरीर
हर समय गिर
हुवा व तप्ताय
मान रहता है।

ज्वर का तीव्र वेग

वुखार जव जोर
से हो जाता है
तब वेहोशी व
घवराहट वढ़
जाती है ज्वर
हाथ पैरों में ज-
लन हड फूटनी
भी वढ़ जाती है।

जलोदर रोग

पेट के भीतर
पानी भर जाना

कमजोरी मन्दाग्नि पुरानी खांसी ठीक होती है।

५५ सुदर्शन चूर्ण

१-२ माशे सुवह शाम गर्म पानी के साथ या चाय के तरीके से औंटा कर देने से हर प्रकार का जीर्ण ज्वर खांसी पुराने से पुरानी ठीक होती है।

५६ दीर्घजीवी आसव

१ तोला दवा १॥ तोला पानी या दूध में मिला कर दिन में ३ वार देवें ज्वर की तीव्र अवस्था घटेगी, घवराहट वेहोशी दूर होगी।

५७ लाक्षादि तैल

हाथ पैरों में या समयानुसार समस्त शरीर में मालिश कराने से जीर्ण ज्वर हडफूटन कमजोरी हड्डीका ज्वर हाथ पावों की जलन दूर होती है।

५८ जलोदरादि रस

दिनमें ३वार २-२ रती ३तोला कुटकी के काढ़ेमें पिलाने से भयंकर जलंधर (जलो-

दर) दस्तों द्वारा पानी निकल कर ठीक हो जाता है परन्तु पथ्यमें दूध देना चाहिये २।। तोला कुटकी ३ पाव पानी में औटावें ६ तोला रहने पर छान लें यही कुटकी का काढ़ा एक दिन के लिये है।

पेट बढ़ जाना शरीर दुर्बल हो जाना पेशाब कम होना आदि लक्षण होते हैं।

५६ दंत सुधा

सवेरे मञ्जन करनेसे दांतों की कमजोरी खून या मवाद आना दांत व दाढ का हर तरह का दर्द होना मसूड़े फूलना आदि ठीक हो जाते हैं।

दन्त रोग

य प्रसिद्ध रोग है

६० मेहान्तक चूर्ण

३ या ४ माशे दवामें वरावर की मिश्री मिला कर खिलावें ऊपर से मिश्री मिला हुआ दूध पिलाने से धातु का गिरना कमजोरी हर तरह के प्रमेह ठीक होते हैं।

६१ वीर्य वर्धक चूर्ण

एक या दो माशा मिश्री मिला कर दुग्ध के साथ देने से पेशाव में शक्कर जाना (मधुमेह) शरीर का दुवलापन ठीक हो। धातु शुद्ध हो, वल्ल वढ़े, स्वप्नदोष ठीक हो जाता है।

धातु रोग

२० प्रकार का प्रमेह किसी तरह भी विना इच्छा के धातु का गिर जाना पेशाब के बाद चींटी लगना शक्कर जाना प्रमेह कहलाता है।

६२ वल्लभारंजन

दो रती प्रातः सायं निगल कर ऊपर से दूध मिश्री मिला पिलावें नपुन्सकता नष्ट होकर शक्ति बढ़ती है पतली धातु पुष्ट होती है।

६३ वंग भस्म

१ रती प्रातः सायं मलाई या गुलकन्द से खिलावें ऊपर से धारोष्ण दूध पिलावें नपुन्सकता नष्ट हो शक्ति बढ़े। जाड़े के मौसम में सेवन करना अमृत तुल्य है।

६४ नासामृत तैल

४ बूंद प्रातः सायं नाक में डालने से विगड़ा जुकाम पीनस नाक की दुर्गन्धि ठीक होती हैं।

६५ नेत्र सुधा

५-७ बूंद प्रातः सायं नेत्रों में डालने से आई आंख जलन कड़क धुन्धुलापन लालामी दर्द ठीक होते हैं।

नपुंसकता

शरीर शक्ति विषय शक्ति की कमी, इन्द्री की शिथिलता शीघ्र पतन पट्ठों की निर्बलता आदि लक्षण होते हैं।

नासा रोग

ये प्रसिद्ध रोग है नाकसे दुर्गंध पीनस आदि।

नेत्र रोग

ये प्रसिद्ध रोग हैं आई हुई आंखों में व ललामी जलन कड़क रोहे आदि हो जाते हैं।

६६ त्रिफला श्रोतन

छोटी शीशी में गुलाब जल या पानी डाल कर सारी दवा हल कर देना चाहिये दो चार बूंद आंखों में डालने से आंख का जाला फूला माड़ा धुन्ध दुखना रोहे, लालामी आदि ठीक हो जाते हैं।

आंख में जाला

मकड़ी के जाल की तरह फैल जाता है। फूला आंख के ऊपर सफेदी आ जाती है।

६७ नयनराज

१ चावल सुर्मा सलाई से सुबह शाम आंख में आँजने से आँखों की कम-जोरी जाला धुन्ध पानी का बहना रात का नहीं दीखना (रतोंधी) आदि ठीक हो जाते हैं।

धुन्ध में

आंखों से साफ दिखाई नहीं देता रतोंधी रात को दिखाई नहीं देता है।

६८ महामारी रस

मात्रा दो रत्ती लवंग अजवायन या पीपल के योग से पान के रस या अदरख के रस में ४-५ वार देना चाहिये। ग्रन्थि (गिल्टी) पर नं० ४० का लेप लाल मिर्च के साथ पीसकर गौमूत्र में लगाना चाहिये प्लेग के सभी उपद्रव ठीक हो जाते हैं।

प्लेग

ग्रन्थिक महामारी गाँठ पड़कर भयंकर बुखार बेहोशी आदि लक्षण होते हैं।

६६ प्रतिश्यायारि

२ गोली (चूर्ण रूप में दो रत्ती) सुबह

प्रतिश्याय रोग

नाक बहना जु-आदि

शाम गर्म दुग्ध या पानी में देने से हर तरह का जुकाम नजला ठीक हो जाता है।

७० पाण्डु ज्वर हारि

पांडु रोग
सदैव ज्वर रहते हुए नेत्र नख मुख शरीर पीला हो जाना है, पेट में खराबी हो जाती है।

१ या २ माशे गौ के मठे के साथ देने से पाण्डुज्वर तिल्ली जिगर की खराबी ठीक हो जाती है।

७१ माण्डूर भस्म

२ रत्ती दवा सुबह शाम त्रिफला १॥ माशे के साथ देकर ऊपर से गर्म पानी पिलाने से उपर्युक्त रोगों में लाभ होता है। जिगर संबंधी रोगों में ये संसार प्रसिद्ध है।

७२ आनन्द नस्य

सुबह शाम नाक में सूँघने से नेत्रों का पीलापन पांडुता व भयंकर जुकाम नाक टपकना नजला आदि ठीक होते हैं।

७३ हिम सुधारत्न

पित्त विकार
गर्मी बढ़ जाना चक्कर आना अन्तर्दाह रहना पित्त कफ

२ रत्ती जरूरत के समय पानी या दूध के साथ देने से पैत्तिकज्वर चक्कर घबराहट ज्वर की तीव्रता और दाह को

से बच्चों को खांसी चेचक आदि ।

कम करके शांति प्रदान करता है ।

७४ प्रवाल भस्म

१-१ रत्ती सुबह शाम मिश्री या गुड़ की चासनी में देने से उपर्युक्त रोगों में एवं बच्चों की खांसी चेचक दांतों के कष्टों में लाभ करती है । अधिक कमजोरी में २-२ रत्ती सुबह शाम मलाई में खिलाना चाहिये ।

वातरोग

वातरोग ८४ प्रकार के होते हैं सन्धियों की पीड़ा हाथों पैरों का जकड़ जाना आदि ।

वातव्याधि से कमर पसली पीठ गांठों में दर्द होना शरीर में कंप आदि अनेकों रूप होते हैं हर तरह के दर्द वायु के प्रकोप से हुआ करते हैं

७५ वातकेशरी

२रत्ती सुबह शाम और रात को अजवायन १॥ माशे और गुड़ के शर्बत में देने से वायु विकार गठिया हाथ पैरों का दर्द ठीक होता है ।

वात रोगों में दवाई सेवन कराने के पहिले दस्त साफ होने के लिए दस्तावर दवा लेना चाहिये ।

७६ लोह भस्म

उपर्युक्त विधि से उपरोक्त रोगों में लाभ होता है नपुन्सकता प्रमेह कमजोरी रक्त की कमी में भी २-२ रत्ती दवा सुबह शाम दूध के साथ देना चाहिये ।

७७ प्रेम तैल

मालिश कराने से हर प्रकार के वायु रोगों में एवं हर तरह के दर्दों में तथा नपुन्सकता में इन्द्रिय पर मालिश करने से तत्काल लाभ होता है।

बच्चों को डिब्बा

पसली श्वास चलना पेट फूलना आदि लक्षण हैं।

७८ बाल पाल घुटी

१॥ माशे दवा २ तोला पानी में औटावें चौथाई रहने पर २ रत्ती गुड़ डाल कर पिलावो इससे ज्वर मल की खराबी अरुचि खांसी स्वांस पसली आदि हर एक रोगों में लाभ होता है।

बाल रोग

बच्चों का पेट बढ़ कर मिट्टी खाने से पांडु रोग हो जाता है

बच्चों को ज्वर खांसी वमन पतले व हरे पीले दस्त बदहजमी श्वास सूखा रोग आदि अनेकों तकलीफ हो

७९ वृद्धोधर चूर्ण

४ रत्ती से १ माशा तक अजवायन सैंधा नमक के काढ़े में डाल कर पिलाने से बढ़ा हुआ पेट पांडु मिट्टी के दोष ठीक होते हैं।

८० बाल कीर्ति रस

१ रत्ती सुबह शाम रात को मिश्री का शर्बत पान आदि में देने से खांसी ज्वर अजीर्ण और पेट के रोगों में लाभ होता है।

जाती है ।

८१ बाल-सखा

ऊपर की विधि से देने से ज्वर खांसी दिल के रोग हरे पीले दस्त श्वांस बदहजमी सूखा रोग आदि ठीक होते हैं ।

विशूचिका रोग
हैजा के दस्त होना पेशाब बंद हो जाना वांयटे आना आदि ।

८२ विशूचिकारि रस

१-१ रत्ती १-१ घंटे में लोंग के काढ़े में देने से हैजा वमन दस्त उपद्रव सहित ठीक होते हैं ।

८३ अर्क कपूर

५-७ बूँद पानी में देने से उपर्युक्त लाभ होता है ।

विष विकार
अफीम आदि विष खालेना सर्प का दंश बिच्छू ततैया आदि के काटने की पीड़ा ।

८४ विषारि रस

२-२ रत्ती १-१ घंटे बाद में गौ मूत्र के साथ पिलाने से सर्पविष अफीम विष आदि भयंकर विषों के उपद्रव ठीक होते हैं । डंक स्थान पर बिच्छु ततैया मकड़ी आदि के जहर दूर करने के लिए नं० १४ की दवा लगा देवें ।

विबन्ध रोग
दस्त साफ न होना पेट फूलना मल रुक

८५ इच्छा भेदी रस

१-२ गोली (चूर्ण रूप में २ रत्ती) सवेरे ठंडे पानीके साथ देने से ज्यादा एवं

जाना।

नं० २१ का चूर्ण देने से साधारण दस्त साफ़ होता है।

मुख रोग

मुंह में छाले आदि।

८६ मुख गद हरी

मुँह के छालों पर लगा कर लार टपकाने से मुँह के छाले जिव्हा का पाक ठीक होता है।

मोतीझारा

सफ़ेद मोती के समान दाने निकलना सदैव ज्वर रहना आदि

८७ मुक्तादि रस

मात्रा ४ चावल से १ रत्ती तक दिन रात में ४-५ वार वंसलोचन २ रत्ती ५ इलायची के दानों के साथ शहद या मिश्री की चासनी के साथ देने से सब उपद्रव नष्ट हो कर मोतीझारा शांत हो जायगा यदि वाताधिक हो तो लवङ्ग मिलाकर देवें।

मूत्र कृच्छ

पेशाब न होना या कष्ट से होना

८८ मूत्रकृच्छ नाशक

दिन में तीन वार १ माशे कच्चे दूध वा पानी के साथ देने पर मूत्र कृच्छ, मूत्रघात जलन, पीलापन, आदि मूत्र विकार ठीक हो जाते हैं।

यकृतप्लीहा रोग

तिल्ली वाहुट वर-घट जिगर बढ़

८९ प्लीहामृत चूर्ण

२मासे प्रातःसायं मट्ठा या गर्म पानी के साथ देने से वढ़े हुए तिल्ली जिगर

जाना ।

रक्तपित्त रोग

मुख या किसी मार्गसे खून जाना

व जिगर वरम ठीक होते हैं ।

६० अमृताचूर्ण

मात्रा १-२ माशे तक समान भाग मिश्री मिला कर दूध मिश्री या पानी से देने पर नाक मुख गुदा योनि आदि मार्गों से आता हुआ खून रुक जाता है जिस जख्म से खून बहता हो वहां सूखा ही बार बार लगाने से खून प्रवाह रुक जाता है ।

राज्ययक्ष्मा रोग

तपेदिक यक्ष्मा राजरोग ये प्रसिद्ध हैं ।

६१ आनन्द रस

४चावल से १ रत्ती प्रातः सायं पीपल बंशलोचन इलायची और तज के साथ मिश्री के शरबत में देने से राजयक्ष्मा फेफड़ों की खराबी और कमजोरी ठीक होता है ।

शिर रोग

मस्तक में किसी तरह के भी दर्द होना आदि अनेक प्रकार की शिर व्याधियां

६२ स्वदेशी स्प्रीन

४ रत्ती दूध के साथ देने से हर तरह के सिर दर्द ठीक होते हैं । यदि दर्द अधिक हो तो हर एक मात्रा में ६ रत्ती पीपलामूल पीस कर मिला देना चाहिये इसी तरह दिन में ३-४ बार देना

होती है।

चाहिये। नं० की दवा सूंघने से भी छींकें आकर जुकाम साफ हो जाता है।

६३ जैना वाम

मलने से शिर पसली कमर चोट का दर्द बिच्छू विष एवं हर स्थानों के दर्द ठीक होते हैं।

शूल रोग

हर तरह के दर्दों को शूल कहते हैं।

६४ शृंग सुधा

मात्रा १-२ रत्ती दिन में ३ बार घी में खिलाने से शल कटिशूल आदि कहीं का भी दर्द हो रोग में ठीक लाभ होता है।

शोथ रोग

सूजन वर्म आदि को कहते हैं।

६५ कनक लेप

गौ मूत्र में थोड़ी हींग के साथ में दो बार लेप करने से हर तरह का सूजन वर्म ठीक होती है।

श्वास रोग

कफ के वेग से श्वास की गति बढ़ जाना श्वांस लेने में कष्ट कफ की घरघराहट आदि लक्षण हैं

६६ श्वासामृत

१ माशा दिन में दो तीन बार मिश्री के शरबत में पान आदि में देने से भयंकर श्वास खांसी मिट जाता है।

६७ दमादम रसायन

१-२ रत्ती दवा पीपल मिश्री पान या

अदरख के रसमें देने से हर तरह के पुराने से पुराने श्वांस दमा में फायदा होता है।

९८ हेमगर्भ रसायन

१-१ गोली (या चूर्ण रूप में १ या २ रत्ती) ३-३ घंटे में अदरख या पान के रस में देने से शीतांग नाड़ी छोड़ना बेहोशी शिथिलता ठीक होती हैं।

९९ अभ्रक भस्म

१ रत्ती अदरख पान का रस मिश्री पीपल आदि में देने से कफ का वेग श्वास हिचकी सन्निपात त्रिदोष में लाभ होता है।

१०० कांतिसार

उपर्युक्त विधि से देने से उपर्युक्त रोगों में लाभ होता है इसके अलावा अनेकों रोगों में उचित अनुपानों से लेना चाहिये

१०१ चन्द्रोदय

४ चावल अदरख पान आदि उचित अनुपानों में देने से सन्निपात त्रिदोष कमजोरी राजरोग आदि अनेकों रोगों में लाभ करता है।

सन्निपात रोग

बेहोशी केसाथ ज्वर इसकेसंधिक शीतांग चित्तविभ्रम आदि अनेकों भेद प्रभेद हैं। वैद्यक शास्त्रों से लक्षण मिला लेना चाहिये हर तरह के सन्निपातों में पृथक् २ अनुपानों से नं० ९८ से १०२ तक दवाईयां सेवन कराने से पूर्ण लाभ हो जाता है।

इस रोग का इलाज बुद्धि एवं परिश्रम के साथ करना चाहिये।

सन्निपातों में नेत्रों की भृकुटी

चढ़ी हुई रहती है नींद नहीं आती है।

स्त्री रोग

श्वेत प्रदर रक्त प्रदर योनि मार्ग से सफेद या लाल धातु गिरना मासिक धर्म की खराबी, सोम रोग वन्ध्यत्व गर्भिणी के रोग आदि शास्त्रों से लक्षण मिला लेना चाहिये।

जिन बहनों को रजोदोष रहता है उनका शरीर सदा कमजोर रहता है गर्भिणी को रोगों में सावधानी के साथ दवायें देना चाहिये।

१०२ शक्ति जीवन नस्य

नाक में सुंघा कर फूंकने से सन्निपात त्रिदोष बेहोशी नष्ट होती है। सूंघने से छींक आवे तो रोगी साध्य है वरना असाध्य जानना चाहिये।

१०३ प्रदरनाशक चूर्ण

१ माशे दवा में १॥ माशे मिश्री मिला कर सुबह शाम खिलाना ऊपर से गौ दुग्ध या चावल का धोवन (जल) पिलाने से सब तरह के प्रदर ठीक होते हैं।

१०४ रजशोधक चूर्ण

१ माशे दवा में १॥ माशा मिश्री मिलाकर सुबह शाम दूध के साथ खिलाने से रज शुद्ध हो अधिक दिनों तक घाव होना या समय के पहिले मासिक धर्म होना ये दोष ठीक होकर गर्भ धारण की शक्ति बढ़ती है।

34883

१०५ मासिक शुद्धि

मासिक गर्भ के सात दिन पहिले १-१ गोली (या चूर्ण रूप में २ रत्ती)

सुबह शाम तिल और सोंठ के काढ़े के साथ देने से मासिक धर्म शुद्ध समय पर होता है दर्द नष्ट होते हैं।

गर्भ के समय ज्वर खाँसी आदि रोग हो जाते हैं।

१०६ गर्भ चिन्तामणि

मात्रा १-१ रत्ती दिन में ३-४ बार बेखटके दे सकते हैं गर्भ गिरने की शिकायत ज्वर खांसी दस्त आदि भयंकर रोग क्रमशः अनार के रस जीरा मिश्री या पान के रस में देने से नष्ट होते हैं।

स्वर भेद रोग गला बैठ जाना

१०७ किन्नर कंठ वटी

१-२ गोली (चूर्ण रूप में १ रत्ती) मुंह में डालकर चूसने या पान में रख कर खाने स गले की खराबी ठीक होती है।

हृदय रोग दिल की कमजोरी रस रक्त धातुओंकी कमी दिल की धड़कन आदि

१०८ आरोग्य जीवन

१ माशा दवा १॥ माशा मिश्री मिला कर देने एवं ऊपर से दूध मिलाने स शरीर की क्षीणता कमजोरी गठिया हर तरह की कमजोरी दिल की धड़कन ठीक होती है।

महिलाओं के लिये शुभ सूचना

स्त्रियों के समस्त कठिन से कठिन एवं गुप्त रोगों की व समस्त बाल रोगों की एवं सर्व साधारण रोगों की कुल ७५ अनुभूत अमूल्य औषधियां "K.N.महिला वक्स" जिसका वजन करीब १५ सेर होगा । जो दवाएं करीब ४००० रोगियों को फायदा पहुँचा सकती हैं। शाखा खोल कर मुफ्त बांटने वाली बहिनों एवं सज्जनों को रेल्वे पार्सल द्वारा मुफ्त भेजी जाती हैं।

१—उद्देश्य—इस औषधालयका मुख्य उद्देश्य शुद्ध एवं शीघ्र लाभ करने वाली उत्तमोत्तम औषधियां मुफ्त वितरण करके रोग ग्रसित बहिनों व बालकों को लाभ पहुँचाना है व नारी समाज का वैद्यक की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए हर एक स्थानों में शाखायें खोलना आदि अनेक उपायों से अपनी दुखित बहनोंका उपकार करना है।

२—शाखा—इस औषधालय की शाखा खोलने का अधिकार प्रायः बहिनों को ही है बहिनों के अशिक्षित होने पर पुरुष शाखा खोल सकते हैं। शाखाओं को वर्ष में कई बक्स या जितनी भी दवायें खर्च हों व निजी खर्च को वर्ष में १ बक्स मुफ्त भेजा जाता है।

पूरा बक्स मंगाने पर प्रथम वार खर्च इस प्रकार होगा—

मेम्बरी फीस एक वर्ष की १) पैकिंग खर्च शीशी बोतल ३।।) पेटी बक्स ।।), रोगी पर्चे रजिस्टर नक्शे आदि १), रेल्वे तांगा बिल्टी वी० पी० आफिस खर्चा ।।।=), धर्मादा ।), कुल ७=) खर्चा होता है। अगली वार मंगाने से मेम्बरी फीस कमी हो जावेगी, थोड़ेसे खर्च में ही एक पूरा दवाखाना खुल जाता है। दवाओं के साथ एक "महिला चिकित्सासार" नामकी पुस्तक भेजी जावेगी जिसमें रोगों का खुलासा वर्णन और दवाओं की सेवन विधि विधान लिखी गई हैं इस के सहारे से अपने व दूसरों के हर प्रकार के रोगों का इलाज कर सकते हैं। पता—

आ. इ. चन्द्रकीर्ति जैन औषधालय. देहली।

आवश्यक सूचनायें।

१—कोई भी दवा जब तक रोग नष्ट न हो तब तक सेवन कराना चाहिये। यदि एक दवा लाभ न कर रही हो तो बदल देना चाहिये।

२—रोग या रोगी की अवस्था देख कर मात्रा कम या ज्यादा बढ़ा सकते हैं तथा २-३ दवायें इकट्ठी मिला कर भी दे सकते हैं जैसे सन्निपात में अभ्रम हेमगर्भा, "चन्द्रोदय" आदि २।

३—दवा देते समय हर एक रोगों के लिये प्रत्येक दवा के साथ अनुपान में यदि मिश्री शहद किसी चीज का शर्बत, गुड़, जीरा, सोंठ, अजवान, पीपल, बंशलोचन, पान का रस या अदरख का रस आदि कोई भी २-३ वस्तुओं के मिश्रण (संयोग) करने को बतला दिया जावे तो थोड़ी मात्रा में भी भारी लाभ होता है।

४—अनुपान विधि हम तो यथावत लिख ही रहे हैं परन्तु देश काल या रोगी की अवस्था पर विशेष ध्यान रखते हुए अनुपान (सेवन) विधि बतला देना चाहिये।

५—बच्चों के लिए इसमें यद्यपि पृथक दवाएं हैं फिर भी आवश्यकता पड़ने पर हर एक दवा रोगों के अनुसार थोड़ी२ मात्रा में दे देना चाहिये।

विशेष—(१) बवासीर की दवायें नं० १७, १८ को सेवन करते समय पानी में भीगी हुई कच्ची चने की दाल जितनी भी खा सको सुबह शाम खाना चाहिये। (२) नं० २५, २६, २७ के सेवन करते समय सोजाक और उपदंश में नमक त्याग कर देना चाहिये। नं० ५८ जलोदर रोग के समय केवल दूध ही देना चाहिये। (४) नं० ६४ शूल रोग की दवा सेवन करते समय दो फाड़ वाली यानी चना उड़द मूंग तूअर आदि सभी दालों का त्यागकर देना चाहिये।

सुख प्राप्ति के लिये सच्चे उपाय

भारत में सबसे निराला

"प्रेम"—पाक्षिक पत्र

इसमें उत्तमोत्तम लेख, समाचार, कविताएं, व्यापारिक सफलता के साधन, द्रव्य-प्राप्ति के उत्तमोत्तम उद्योग, धन्धा, विज्ञानकला यंत्र, मंत्र, तंत्र, वैद्यक, रोगों की चिकित्सा, बाल-चिकित्सा, गुप्त रोगों की चिकित्सा, बारह राशि फल, प्रत्येक वस्तुओं की तेजी-मन्दी, रूई, गेहूँ, चांदी के प्रति दिन-दिन के ५ टाइम के भाव आदि गृहस्थोपयोगी विषय बड़ी ही खोज के साथ प्रकाशित होते हैं। ये 'प्रेम पत्र' प्रत्येक ग्रहस्थ के हाथ में रहने की एक अमूल्य वस्तु है। एक-एक लाइन महत्त्वपूर्ण एवं जीवन को सुखदायक बहुमूल्य है। वार्षिक मूल्य-मात्र परिश्रम ४) रु० वार्षिक। संसार में काफी प्रचार हो, प्रत्येक जनता लाभ उठा सके, इसी कारण इतना अल्प-मूल्य रक्खा है। ।~) माहवार व्यर्थ नहीं जाता, प्रत्येक बन्धुओं को इसका ग्राहक होना चाहिए। ये पत्र चन्द्रकीर्ति व K. N. जैन महिला औषधालय के मेम्बरों को पौने मूल्य में दिया जावेगा। अपना शाखा नं० लिखना चाहिए। नमूना =) का टिकिट भेजकर मंगावें।

पता—

मैनेजर—जैन ज्योतिष यंत्र कार्यालय

पहाड़ी धीरज देहली।

ज्योतिष का निराला आविष्कार

माननीय वन्धुओ !

इस विज्ञप्ति को अन्य विज्ञापनों की तरह विज्ञापन मात्र समझ कर यों ही अवहेलना न कर दीजिये, वल्कि मुफ्त में ही दो-चार वातों की परीक्षा करके हमारे सच्चे परिश्रम को सफल कीजिये। हमारे यहां ज्योतिष, सामुद्रिक, रमल शास्त्र आदि अनेकों विधानों से जन्म फल, वर्ष फल, प्रश्नों के उत्तर भली प्रकार विचार कर लिखे जाते हैं।

लग्न कुण्डली की नकल, जन्म सम्वत, मास दिन, किसी फूल का नाम या कागज पर हस्त-रेखा छापकर भेजकर जन्म फल या वर्ष फल वनवा सकते हैं। फल विलकुल सही सरल हिन्दी भाषा में लिखे जाते हैं, जो अक्षरशः सत्य निकलते हैं। यदि फल में कोई गड़वड़ी नजर आवे, तो जवानी पत्र द्वारा हमारे वनाए हुए फलों में प्रश्नों के उत्तर मुफ्त पूछ सकते हैं। उत्तर पत्र मिलते ही भेज दिए जाते हैं।

जिन्दगी भर के मास मास का फल	५१)
जिन्दगी के मास मास का फल	३१)
जन्म फल—जिन्दगी भर का फल	५)
वर्ष भर का सप्ताह सप्ताह का फल	३)
वर्ष फल—वर्ष भर के मास-मास का फल	१।)
वर्ष भर का दिन-दिन का फल	११)
प्रश्नों के उत्तर प्रति प्रश्न	।)
५ प्रश्नों के उत्तर	॥=)

घर बैठे पैसा कमाने का खास साधन

रुई चाँदी गेहूं फीचर आदि का प्रतिदिन के ५टाइम का भाव

पाक्षिक "प्रेम" पत्र में पढ़िये

नमूना मुफ्त । वार्षिक मूल्य ४) रु० ।

अलसी, सौना, जस्त आदि प्रत्येक वस्तुओं की तेजी-मन्दी व अचूक चांस प्रति वस्तु पाक्षिक २) रु० में तथा लक्ष्मी प्राप्ति व हर तरह की गुप्त चिन्ताओं को नष्ट करने के लिये यंत्र-मन्त्र एवं ताम्र पत्र पर खुदे हुए सिद्धचक्र विनायक यंत्रादि अभीष्ट सिद्धि प्राप्त करने के साधन प्राप्त कीजिये । ग्रहशान्ति विधानादि कार्य भी विलकुल सही रूप में परिश्रम मात्र व्यय में ठीक टाइम पर होते हैं ।

कष्टों से वचने का बीमा

यदि आपको व्यापार, नौकरी, सन्तान, शारीरिक एवं मानसिक कोई भी कष्ट रोग हो, तो उत्तर के लिये =) का टिकिट भेज कर हर तरह के कष्टों की निवृत्ति हमारे यहां से कराइये । आपके लिखे हुए कष्टों से वचाने में जो भी यन्त्र मन्त्र अनुष्ठान आदि उपयुक्त होंगे, हम सदैव हर हालत में मुफ्त ही भेज देंगे, सफलता होने पर आपकी जो भी इच्छा हो, कार्यालय को भेज सकते हैं ।

हर तरह के पत्र-व्यवहार का पता—

मैनेजर—जैन ज्योतिष यंत्र कार्यालय

पहाड़ी धीरज, देहली ।

सहस्रों रोगियों पर अनुभूत चमत्कारपूर्ण

. प्रेम तैल (Prem Tel)

जंगल की ताजा जड़ी-बूटियों तथा बहुमूल्य औष-धियों के प्रयोगों द्वारा महान् परिश्रम से तैयार किया हुवा।

सर्व प्रकार के दर्द, गठिया, सूजन, वर्म, दद पसली तथा नमूनिया, बच्चों की पसली चलना (डिब्बा) आदि पर, घाव, जलन, जहरीले जानवरों के विष की जलन तथा शरीर के किसी भी हिस्से का सुन्न पड़ जाना, चोट लगने से खून निकलना, नजला आदि किसी कारण से सर दर्द, अथवा शरीर के किसी भी हिस्से में दर्द हो, कनफेड़, बवासीर के मस्से तथा हाथ-पांव में बिवाई का फटना, फोड़े-फुन्सी तथा आतशक के विषैले जख्मों पर तथा नपुंसकता इंद्री की नसों का कमजोर हो जाना आदि अनेकानेक रोगों में तत्काल फायदा करता है। ये तेल नेत्रों के सिवाय प्राणी-मात्र, जीवों के बाहरी अंग पर लगाया जा सकता है। विशेषता रीफ व्यर्थ है, आजमाइश करके सत्यता निर्णय करें। नमूना मुफ्त मूल्य-मात्र परि-श्रम २ औंस की शीशी ।=), १ दर्जन ३।।) रु०, प्रति सेर ३) रु०।

मिलने का पता—

मैनेजर—जैना केमिकल कम्पनी,

पहाड़ी धीरज, देहली।

स्वास्थ्य रहने के सरल उपाय—

(१) संसार में दो ही सुख हैं 'स्वास्थ्य' और 'धन' इन दोनों में इतना अंतर है कि धन का सब लोग उपयोग नहीं करते किन्तु स्वास्थ्य को सभी प्राप्त कर सकते हैं। (२) प्रातःकाल में उठने वाला मनुष्य आरोग्यवान् भाग्यवान और ज्ञानवान् होता है। (३) प्रातःकाल उठते ही सूर्योदय से पहिले स्वच्छ तांबे के लोटे में रात भर रक्खा हुआ जल पीनेसे रोगी भी निरोग और विप निर्विप हो जाता है, और आयु बढ़ती है। (४) प्रातःकाल की ताजी और खुली हवा बड़े २ पौष्टिक पदार्थों और रामबाण औषधियों की अपेक्षा अधिक पुष्टकर और आरोग्यप्रद है। (५) केवल दो ही समय भोजन करना चाहिये भोजन नियमित समय पर करो और फिर बीच में कुछ भी न खाओ।(६) भोजन के पदार्थ खूब चबाकर खाने चाहियें क्योंकि पेट में दांत नहीं हैं. (७) भोजन सदैव प्रसन्न चित्त से करना चाहिये क्रोध में अन्न विप बन जाता है। (८)भोजन करनेके उपरांत शारीरिक व मानसिक परिश्रम १ घंटा तक मत करो। आध घंटा आराम अवश्य करो।

पथ्य—सामान्यतः प्रत्येक रोगों में गेहूं की रोटी, मूंग अरहर की दाल, गौ दुग्ध ताजा, गौ का मठा,लौकी तुरई अंगूर अनार सेव मुनक्का मखाना आदि हलके सुपाच्य जल्दी हजम होने वाले पदार्थ खाने चाहियें।

अपथ्य—तेल गुड़ खटाई लालमिरच उड़द की दाल मांसाहार गरिष्ठ (देर में पचने वाले) भारी पदार्थ अधिक परिश्रम, दिन में सोना रात में जागना अधिक विषय लंपटता आदि से परहेज रखना चाहिये।

निवेदक—व्यवस्थापक

जैन समाज की असहाय अनाथ विधवा बहिनों के लिये भोजन वस्त्र रहने आदि एवं धार्मिक लौकिक शिक्षा की सुव्यवस्था।

प्रार्थी बहिनों को पूर्ण परिचय सहित निम्न पते पर लिखना चाहिये।

धर्मनिष्ठ बन्धुओं को यथावसर दान निकालते समय इस संस्था का भी ध्यान रखना चाहिये।

मंत्रिणी—

श्री दि० जैन महिला शिक्षाश्रम
नया मंदिर, पहाड़ी धीरज देहली।